



UG – 069

²⁵
IV Semester B.Com. Examination, September/October 2022
(CBCS) (F+R)
(2019-20 and Onwards)
LANGUAGE-HINDI – IV
Upanyas, Patrachar Aur Translation

Time : 3 Hours

Max. Marks : 70

- I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में लिखिए। (10×1=10)
- 1) रंगनाथ अपने स्वास्थ्य सुधारने कहाँ आ गया ?
 - 2) चुनाव का महिपालपुर वाला तरीका कैसा था ?
 - 3) बद्री और बेला का विवाह प्रस्ताव लेकर कौन गया ?
 - 4) बेला असल में किससे प्यार करती थी ?
 - 5) रामाधीन कलकत्ते में क्या काम करता था ?
 - 6) आटे की चक्की के बारे में कौन पढ़ाते थे ?
 - 7) 'राग दरबारी' उपन्यास के लेखक कौन हैं ?
 - 8) कोआपरेटीव यूनियन में क्या गबन हुआ था ?
 - 9) बद्री पहलवान कौन हैं ?
 - 10) छंगामल इन्टर कॉलेज का मैनेजर कौन था ?
- II. निम्नलिखित प्रश्न में से किन्हीं दो का उत्तर लिखिए (2×12=24)
- 1) उपन्यास के तत्व बताते हुए 'राग दरबारी' की समीक्षा कीजिए।
 - 2) 'राग दरबारी' उपन्यास की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।
 - 3) 'राग दरबारी' उपन्यास, आजकल की राजनीतिक व्यवस्था का यथार्थ चित्रण हैं – इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.



III. किन्ही दो विषय पर टिप्पणी लिखिए।

(2×8=16)

- 1) वैद्य
- 2) बट्टी पाइलवान
- 3) बेला
- 4) रंगनाथ

IV. कोई एक पत्र लिखिए।

(1×10=10)

- 1) भारत सरकार, खाद्य एवं कृषि विभाग, नई दिल्ली की ओर से कार्यालय के स्थान परिवर्तन के बारे में सूचना देते हुए एक कार्यालय ज्ञापन प्रस्तुत कीजिए।
- 2) भारत सरकार, लोक कल्याण विभाग नई दिल्ली की ओर से श्री बालकृष्ण को अधिकारी पद का चुनाव के बारे में स्वीकृति पत्र प्राप्त होने के बारे में ज्ञापन पत्र लिखिए।

V. हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

(1×10=10)

Ravindranath's name and fame spread all over the world after he had been conferred with the nobel prize. People from all over the world become eager to go through his creations. His books started translated into various languages. He nourished great love for his mother land whereas he never despised foreign countries. Ravindranath travelled Bengal with the message of Union between east and west. Wherever he set his feet, he was welcomed wholeheartedly and his words were listened with eagerness by people.

नोबेल प्रशस्तिप्राप्त होने के बाद राविविन्द्रनाथ का नाम और नामावा प्रसारण दुनियामे फैल गया। दुनियामे से लोग उसकी रचनाएं पढ़ने के लिये उत्सुक हुए। उसकी पुस्तकें अनेक भाषाओं में अनुवाद की गईं। वह अपने मातृभूमि के प्रति प्रेमपूर्ण भावों से भरा हुआ था जबकि वह विदेशों को भी नजरअंदाज नहीं करता था। राविविन्द्रनाथ बंगाल में एकता के संदेश के साथ यात्रा करते हुए थे। जहाँ वे पैर रखते थे, वहाँ वे सत्कार के साथ स्वागत किए जाते थे और उनके शब्दों को लोग उत्सुकता से सुनते थे।